INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

''तर्कवाद का शैक्षिक दर्शन और इसका वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यांकन''

"Educational Philosophy of rationalism and its evaluation in present educational system"

Dr. Navdeep Kumar Maurya
Assosicate Professor,
Dept. of B.Ed./M.Ed.
Hindu College, Moradabad.
Affl. Guru Jambheshwar University,
Moradabad (Uttar Pradesh, India)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/10.2025-57369669/IRJHIS2510023

शोध सारांश :

तर्कवाद, तर्कों पर आधारित बुद्धिवाद का दर्शन है। तर्कवाद के चार रूप–गणितीय तर्कवाद, बुद्धिवाद, धार्मिक तर्कवाद और ज्ञान मीमांसीय बुद्धिवाद है। इसका मानना है, कि बुद्धि की प्रगति तर्क का परिणाम है। तर्क के दो प्रकार अनौपचारिक तर्क और औपचारिक तर्क है। तर्कवाद का शैक्षिक उदेदश्य किसी विचार के कारण, या विशलेषण को स्वीकार करना है। जो तर्क की सत्यता के परिणाम से मिले है। तर्क भी कई प्रकार के हो सकते हैं। जो साक्ष्य आधारित चयन विधियों पर निर्भर करते हैं। तर्कवाद अनुभववाद का विरोध करता है। तर्कवाद वैज्ञानिक सोच और आलोचनात्मक चिन्तन से ससमस्या समाधान के कौशल का विकास किया जा सकता है। इसमें शिक्षक निर्णायक और मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकता है।

मुख्य शब्द : *बुद्धिवाद, वैज्ञानिक–सोच, समस्या–समाधान कौशल, आलोचनात्मक चिन्तन।*

प्रस्तावनाः–

तर्कवाद एक आधुनिक दर्शन है। इसमें तर्कपूर्ण ठंग से सोचने एवं वैज्ञानिक तौररीके अपना कर विचारों एवं वस्तु का विश्लेषण करने का तरीका है। आधुनिक समाज में विज्ञान एवं –त तकनीकी के विकास के साथ–साथ चीजों को समझने का तरीका भी बदला है तर्कबाद एक सोच, दर्शन या विचारधारा है जो समस्या–समाधान करने एवं आलोचनात्मक सोच विकसित करने में मदद करती है।

ज्ञान जन्मजात नहीं होता इसे तर्कपूर्ण ठंग से प्राप्त किया जाता है और इसमें तर्क व कारण के द्वारा वस्तु या विचारों का विश्लेषतक सोच, आलोचनात्मक सोच एवं वैज्ञानिक सोच के द्वारा समस्या–समाधान कौशल का विकास किया जाता है। स्कूल पाठ्यक्रम में विज्ञान, गणित और व्यवहारिक जीवन कौशल के विषयों के अध्ययन से बच्चों में तर्कपूर्ण ठंग से सोचने की प्रेरणा देकर उनमें अत्म–चिन्तन, तर्कपूर्ण मूल्यांकन के द्वारा तर्कवाद को बढ़ाया जा सकता है।

तर्कवाद पर भारतीय दृष्टिकोण –

भारतीय दर्शन में तर्कवाद को पूर्व आपेक्षित ज्ञान या जन्मजात विचारों को माना है। तथा कथित रूप से तर्क के सत्य को जाना है और इसमें अनुभव की आवश्यकता नहीं मानी भारत में तर्कवाद ज्ञान, सत्य और समझ की प्राप्ति का साधन माना है। कुछ भारतीय दर्शन जैसे– चार्वाक दर्शन, वौध दर्शन एवं साख्य दर्शन में इसे महत्व मिला है।

तर्कवाद की ज्ञान एवं तर्क मिमांनसा –

तर्क ज्ञान प्राप्ति का साधन है। इसमें विषय पर गहरी सोच एवं समझ से सत्य को समझने, फैलाने, गलतियों को सुघाने और समझने में मदद करता है सच्चाई और सत्य की समझ को प्रभावी ढंग से संवाद करने में मदद करता है। इसकी तत्वमिमान्सा में तर्कवाद मन के विचारों और प्रकृति से सम्बन्धित है। यह ज्ञान की प्रकृति का अध्ययन, मन की धारणाएँ और विचारों की वास्तविकता की समझ मैं इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

तर्कवाद का अर्थ और परिभाषा–

तर्कवाद को बुद्धिवाद का समानाथर्ति समझते है। तर्कवाद ज्ञान के निष्कर्ष या सत्य के लिए गणना और तर्कपूर्ण दृष्टिकोण है। यह एक दार्शनिक आधार भूत सिद्धान्त है। जो लैटिन दार्शनिक रेने डेसकार्टेस के विचार ''में सोचता हूँ इस लिए मैं हूँ'' से उत्पन्न हुआ है।

''किसी चीज को समझने के लिए तर्क का इस्तेमान करना हो तर्कवाद है,'' रेने डेसकार्टेस को तर्कवाद का पिता कहते है। भारतीय दर्शन में गौतम बुद्ध, ओसो एवं डॉ0 अम्बेडकर तर्कवादी दर्शनिक विचार धारा के समर्थक कहे जा सकते है।

तर्कवाद के मूलभूत सिद्धान –

तर्कवाद के बुनियादि सिद्धान्त निम्न है–

- तर्कवाद ज्ञान के स्रोत या न्याय संगति के लिए तर्क का इस्तेमाल करता है।
- तर्क ही ज्ञान का मुख्य स्रोत है।
- इंद्रियों से धोखा दिया जा सकता है।
- ज्ञान या सत्य ही हमारी समझ व इंद्रियां बोध के बिना प्राप्त किया जाता है।
- मस्तिष्क में जन्म से ही जन्म–जात विचार या अवधारणा होती है।
- बुद्धि की प्रगति तर्क का परिणाम है।
- हमारा कारण भी हमारे नैतिकता और विश्वास को सही ठहराता है।
- ज्ञान एक धर्मनिपेक्ष दृष्टिकोण के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।
- हमारा दार्शनिक दृष्टिकोण या विश्वास है कि 'कारण' ज्ञान का सबसे अच्छा परिक्षण है। इसके तीन वुनियादि सिद्धान्त है।

  1. अंतज्ञान/निष्कर्ष का सिद्धान्त, 2. संहज ज्ञान का सिद्धान्त, 3. सहज अवधारणा का सिद्धान्त

तर्कवाद के रूप –

तर्कवाद के मुख्य चार रूप है जो निम्न है।

- क. गणितीय तर्कवाद

- ख. बुद्धिवाद
- ग. धार्मिक तर्कवाद
- घ. ज्ञान मीमांसनीय बुद्धिवाद

क. गणितीय तर्कवाद –

यह तर्कवाद का वह रूप है जिसमें गणित की किसी शाखा की तरह अंकगणित वास्तविक विश्लेषण से जुड़ा होता है। इसका समर्थन रेने डेसकार्टेस, बडैड, रसेल और अल्फ्रेड नार्थ वहाइटट्रेड जैसे दार्शनिकों ने किया।

रेने डेसकार्टेस – के अनुसार ज्ञानोदय के लिए विकसित बहाने का आकार तैयार कर शश्वत सत्य के तर्क से खोजा जा सकता है और भौतिक जगत में गणितीय सिद्धान्त को लागू किया जाना चाहिए इनके दर्शन को 'कोटेसियनवाद' के रूप में जानते हैं। इन्हें तर्कवाद का जनक भी कहते हैं। इन्होंने कहा– ज्ञान, बुद्धि की अवधारणा से प्राप्त होता है न की इन्द्रियों से।

ख. वुद्धिवादी तर्कवाद–

वुद्धिवादी तर्कवाद का विश्वास है कि तर्क के जरिए ज्ञान हासिल किया जा सकता है। इसके समर्थकों में प्लेटों, सुकरात, रेने डेसकार्टेस विल्हेम लीवनिज और बारूक डी स्पनोसा सम्लित है।

प्लेटो– को वुद्धिवादी तर्कवाद का जनक माना जाता है और सुकरात ने तर्कवाद को नया रूप दिया।

रेने डेसकार्टेस को आधुनिक तर्कवाद का जनक कहते हैं इन्होंने कहा कि– ज्ञानोदय के लिए वहस को आधार मान कर आस्त्वि को आत्म प्रतिविव और तर्क के माध्यम से जाना जा सकता है।

विल्होम लीवलिज को तर्कवाद का संस्थापक भी कहा जाता है इन्होंने सारी दुनिया में एक तर्कसंगत व्यवस्था की बात की बारूक डी स्पनोजा के अनुसार– ''तर्क'' ज्ञान का सर्वोत्म रूप है और वास्तविकता की सच्ची प्रकृति को समझने की कुंजी भी है ईश्वर, प्रक्रति और भौतिक ब्राह्मड भी एक ही है।

ग. धार्मिक तर्कवाद–

धार्मिक तर्कवाद इस विश्वास पर आधारित है। कि तर्क के जरिए धार्मिक सत्य का पता लगाया जा सकता है। इसके भी कई रूप है। जैसे– 1. इस्लामिक तर्कवाद के दार्शनिक समर्थक जिनकी नगुइव महमूद 2. आस्तिक तर्कवाद जो प्राकृतिक, ईसाईधर्म और तर्क का संकर है इसके समर्थक हेनरी कोरसे यीसेन, 3. विक्टोरियन वुद्धिवाद इन्होंने कट्टरपंथी और अनुभववादी धारणाओं को पुनः जीवित किया।

घ. ज्ञानमीमांसीय वुद्धिवाद–

यह तर्कवाद इस बात पर केन्द्रित है कि ज्ञान की प्रकृति क्या है और इसे कैसे हासिल किया जा सकता है। इसके समर्थक है, प्लेटो, सुकरात, रेनेडेसकार्टेस, इमैनुअल कटे आदि।

प्लेटो के अनुसार– औचित्य तर्क से होता है। इंद्रिया से नहीं सबसे प्राथमिक ज्ञान एक पूर्वनुमेय है।

इमैनुअल कटे के अपने ज्ञान मीमांसा के ब्रांड का नाम ट्रानोडैटल आइडिटिज्म रखा'' और इसमें अनुभववादी और तर्कवादी विचारों का संशलेषण किया।

तर्क के प्रकार– तर्क मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं जो निम्न है –

I- अनोपचारिक तर्क– यह भी दो प्रकार के होते है–

A- निगमनात्मक तर्क B- आगमनात्मक तर्क

II- औपचारिक तर्क– यह भी दो प्रकार के होते है।

A- न्याय वाक्य तर्क B- प्रतीकारक तर्क

शिक्षा में तर्कवाद –

शिक्षा में तर्कवाद का बहुत महत्व है। यह छात्रों एवं शिक्षकों में ज्ञान को केवल तर्क के माध्यम से प्राप्त करने को स्वीकार करता है। गणितीय सिद्धान्तों को ही महत्व देता है। शिक्षा में तर्कवाद का मतलब व्यवहारिक, तार्किक और बौद्धिक तर्क का सिखने–सिखाने की प्रक्रिया में इस्तेमाल करना होता है।

तर्क शिक्षा में सत्यों को निष्कर्ष, कारण तथा सही पहचान दिलाता है और बुनियादी ज्ञान की अनिवार्यता और सर्वभौमिक को स्विकारता भी है।

तर्कवाद के शैक्षिक उद्देश्य– शिक्षा में तर्कवाद के निम्न लिखित उद्देश्य है–

- किसी बात या विचार को स्पष्ट करने के लिए दिए गए 'कारण' या विश्लेषण को स्वीकार करना।
- यह स्वीकार करना कि कुछ विचार ईश्वर से आते हो कुछ जन्म–जात और अन्य कल्पना से आते है।
- तर्क को सत्यता के परिक्षण में प्रयोग कर उन्हें उपलब्ध कराना।

शिक्षा में तर्कवाद के सिद्धान्त– शिक्षा में तर्कवाद के निम्न सिद्धान्त हैं–

- तर्कवाद या बुद्धिवाद और ज्ञान मीमांसा का एक ही सिद्धान्त है।
- वुद्धि ही ज्ञान पाने का सही तरीका है यह अनुभववाद के विपरीत माना जाता है। जो कहता है कि ज्ञान अनुभव के माध्यम से प्राप्त होता है।
- तर्कवाद के अनुसार 'कारण' ज्ञान का प्रमुख स्रोत है।
- सत्य को तलाश करने व उसका जबाव देने की मुनष्य की क्षमता उनकी प्रकृतिक वौद्धिक क्षमता पर आधारित है।
- इंद्रियों को धोखा दिया जा सकता है।

शिक्षा में तर्कवाद की धारण मान्यताए– ये मान्यताएं निम्नलिखित है–

- पूर्वाग्रह के बजाय तर्क को महत्व देना।
- अन्ध विश्वास के बजाय विज्ञान को महत्व देना।
- आस्था के बजाय प्रमाण को महत्व देना।
- लोकतंत्रिक, स्वतंत्रता और धर्मनिपेक्षता के बुनियादी अधिकारों को स्वीकार करना।

शिक्षा में तर्कवाद को लागू करने का तरीका– शिक्षा में तर्कवाद को निम्न तरिके अयनाकर लागू किया जा सकता है–

- मान्यताओं की स्पष्ट अभिव्यक्ति करके।
- सावधानीपूर्वक संरचित तर्कों का इस्तेमाल करके।
- व्यवहारिक, निगमनात्मक, तर्किक और बौद्धिक तर्क का इस्तेमाल करके।

शिक्षा में तर्कवादी पाठ्यक्रम –

तर्कवाद पाठ्यक्रम में छात्रों को विवेकशील एवं तर्कसंगत बनाना से सम्बन्धित होना चाहिए इसके लिए निम्न विषय का पाठ्यम में समावेश होना चाहिए जैसे– गणित, तर्कशास्त्र, ज्ञानमिमानसा, तत्वमिमानसा, नैतिकता, विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, मनोविज्ञान, तकनीकि शिक्षा आदि विषयों का समावेश होना चाहिए।

शिक्षा में तर्कवाद की शिक्षण विधियाँ–

छात्रों के तर्क पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है कि उनकी शिक्षण विधियाँ भी नवीन और तर्कवादी होनी चाहिए।

1. कक्षा में नवीन प्रौधोगिकी, मल्टीमिडिया टूल आदि का प्रयोग किया जाये।
2. आलोचनात्मक सोच और साक्ष्य आधारित तर्क के लिए चर्चा पद्धति का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
3. अवधारणा को छोटे–छोटे भागों में बाँट कर पठाना चाहिए।
4. ग्राफिक, मानचित्र, टीएल.एम. आदि का प्रयोग किया जाऐ।
5. संश्लेषण–विश्लेषण विधि के साथ–साथ दृष्टिांट विधि, प्रश्नोत्तर विधि और ध्यानविधि का उपयोग करना।

तर्कवाद में शिक्षक की भूमिका – शिक्षक द्वारा छात्रों को विषय वस्तु और शैक्षिक अनुशासन के बारे में जानकारी देकर आलोचनात्मक सोच और साक्ष्य आधारित तर्क विकसित करने में मदद करना चाहिए–

- तर्क के आवश्यक तरीकों में बदलाव करके छात्रों की सहभगिता को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- समस्या समाधान कौशल पर जोर देकर साक्ष्य का मूल्यांकन करने और तांर्किक निष्कर्ष निकालने की ज्ञमताओं को विकसित करने पर ध्यान करने को प्रोत्साहित करना।
- शिक्षक को अनुशासन बनाएं रखने के लिए निष्पक्ष रहना चाहिए।
- शिक्षक एक निर्णायक, मागदर्शक और सहयोगी की तरह होना चाहिए।

तर्कवाद में बालक का स्थान –

बालक को खुले दिमाक से सोचने–समझने और सक्रिय बने रहना चाहिए जो आलोचनात्मक चिन्तन करते हुऐ प्रश्न कर सके और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर समस्या समाधान के लिए हमेशा तैयार रहना।

तर्कवाद में विद्यालय की भूमिका –

मनुष्य की क्षमता उसकी प्राकृतिक बौद्धिक क्षमता पर आधारित है। इसलिए विद्यालय पाठ्यक्रम विकास के लिए पारम्परिक मॉडल और प्रगतिशील मॉडल का समादेश तर्कवादी विचारों को रोजमर्रा के फायदे के लिए करें।

मान्यताओं और तर्क के माध्यम से अभिव्यक्ति करने के लिए छात्रों के लिए तर्क, सिद्धान्त और समझ विकसित करने का वातावरण तैयार करें।

तर्कवाद में अनुशासन का महत्व –

शिक्षा के तर्कवादी व्यवहारिक दर्शन के लिए सामाजिक अनुशासन तथा कक्षा में सकारात्मक अनुशासन के साथ–साथ छात्रों में आत्म अनुशासन और जिम्मेदारी भी विकसित करें।

तर्कवाद के शैक्षिक दर्शन का मूल्यांकन– इसका मूल्यांकन निम्न प्रकार किया जा सकता है।

- तर्कवाद अनुभववाद का खंडन करता है क्योंकि अनुभववाद संवेदी अनुभव को महत्व देता है जबकि तर्कवाद अंतज्ञान को।
- तर्कवाद वर्तमान समय में अधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी होता जा रहा है।
- तर्कवाद अंक गणित और वास्तविक विश्लेषण से सम्बन्धित है।
- सभी प्रश्नों का उत्तर तांकिक सोच और तर्क के उपयोग से ही सम्भव है।
- तर्कवाद सीखने को प्रमाणित करने पर ध्यान केन्द्रित करता है।
- तर्कवाद के स्पष्ट अभिव्यक्ति और संचरित तर्कों को शैक्षिक दर्शन भी मान्यता देता है।

निष्कर्ष –

तर्कवाद अपने विचारों को साझाकरने, समझाने का प्रभावशाली तरीका है। जिससे बालक या मनुष्य की अभिव्यक्ति, आत्मज्ञान व आत्म–समझ को प्रगतिशील ठंग से दूसरों तक पहोचाया जा सकता है। तर्क, कारण, परिणाम और वैज्ञानिक सोच इसके केन्द्र में होते है। इसलिए यह एक प्रभावशील एवं विवेकपूर्ण दर्शनिक विचारधारा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि –

1) लाल आर वी (2014) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, रस्तौगी पब्लिकेशन मेरठ–02
2) सक्सैना ए शुक्ला (2016) शिक्षा में दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिदृष्य, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ–01
3) पाण्डेय एवं सिंह (2014) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा–2
4) मदान, श्रीवास्तवा, यादव (2013) उदीयमान भारीतय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
5) सक्सैना चतुर्वेदी एवं कुमार (2013) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक। इार लाल बुक डिपों मेरठ।
6) शर्मा वाई के (2004) सोसियोलॉजीकल फिलोसोफी ऑफ एजूकेशन कृष्णा पब्लिकेशन, डिस्ट्रीव्यूशन, नई दिल्ली –02